गौरीकुंड, चंद्रापुरी मंदाकिनी की जद में

कई होटल, भवन और सड़कें बाढ़ में डूबे रामबाड़ा में 60 के बहने की सूचना

अमर उजाला ब्यूरो

उत्तरकाशी। गंगा-यमुना अपने ही मायके में रौद्र रूप में है। इसकी सहायक नदियां भी उफान पर है। ऐसे में पूरा जिला ही आपदा में फंस गया है। शायद ही ऐसा कोई गांव होगा, जहां आपदा ने अपने निशान नहीं छोड़े। जिला मुख्यालय से सटे तिलोथ और जोशियाड़ा में तो बाढ़ की विभीषिका ने ऐसे जख्म छोड़ दिए हैं, जिन पर मरहम लगाना आसान नहीं। कई होटल, भवन, पुल और सड़कें बाढ़ में समा गई हैं।

पिछले वर्ष असी गंगा और भागीरथी की बाढ़ के जख्म अभी भरे भी नहीं थे, कि एक बार फिर इन नदियों ने रौद्र रूप धारण कर तोड़फोड़ मचाई है। भागीरथी अपने उद्गम से ही किनारों को काटती हुए आगे बढ़ी है। गंगोत्री मंदिर परिसर की ओर पानी बढ़ने से वहां अफरा-तफरी का माहौल है। लोग बचाव के लिए भागीरथी के दूसरी ओर शरण ले रहे हैं। भागीरथी जैसे-जैसे आगे बढ़ी, उसका रूप और विकराल हो गया। नेताला में एक बीएड कालेज, एक होटल सहित तिलोथ सेरा, मनेरी डैम कालोनी से लेकर जोशियाड़ा तक दर्जनों आवासीय भवनों और होटलों को बहाती हुई आगे बढ़ी। अब उसका रुख महाकाल कालेश्वर मंदिर की ओर है। भागीरथी के दोनों छोरों पर हो रहे करोड़ों के बाढ़ सुरक्षा कार्य भी बह गए हैं। क्षेत्र में बिजली, पानी और संचार सेवाएं ध्वस्त हो गई हैं। यमुनोत्री मार्ग पर मार्ग राम मंदिर से भिंडियावाली गाड तक दो स्थानों पर करीब डेढ किमी बह गया है। खरादी में भी छह होटल ध्वस्त हो गए हैं। बाडिया, असगेड गाड, जंगलचट्टी में भी पचास-पचास मीटर हिस्सा बह गया है। खरादी में छह होटल यमुना की भेंट चढ़ गए हैं। नगाण गांव को जोड़ने वाला झूला पुल भी यमुना की भेंट चढ़ गया है। जिले के कई गांवों में भी बारिश से हालात खराब हैं। भेला टिपरी में पिलंगगाड परियोजना भी बंद हो गई है। परियोजना का हेड टूट गया है। वहां पुल भी खतरे की जद में है। वहीं समीप में दो ढाबे और स्वामी दिनेशानंद का आश्रम भी बाढ़ की भेंट चढ़ गए हैं।

भागीरथी के दोनों छोर पर हुए करोड़ों के सुरक्षा कार्य बह गए

उत्तरकाशी में भागीरथी के उफान से जोशियाड़ा में इस तरह ढह रहे हैं मकान।

उत्तरकाशी के जड़भरत मार्ग में स्नान घाट की ऐसी हो गई दशा।

उत्तरकाशी में भागीरथी के उफान से तिलोथ पुल का एप्रोच बहा।

उत्तरकाशी जिले में यहां हुआ नुकसान

- उत्तरकाशी की वाल्मीकि बस्ती में पानी घुसा। प्रशासन ने राहत शिविर में ली शरण।
- रनाड़ी और डिडसारी गांवों में पैदल पुल ध्वस्त। डिडसारी गांव में चार मकान दबे।
- झाला गांव में एक हजार बकरी और चरवाहा दबे।
- सैंज गांव में एक धर्मशाला और तीन कारें बही।
- भटवाड़ी में गढ़वाल मंडल विकास निगम का गेस्ट हाउस भी भागीरथी के तेज बहाव में समा गया।
- मनेरी भाली परियोजना में मलबा घुसा, उत्पादन ठप।
- धनारी पट्टी में धनपति नदी में बाढ़ से 12 गांवों की खेती तबाह।
- पिलंग गांव में गदेरे उफान पर ग्रामीणों ने स्कूल में ली शरण। ट्राली और घराट भी बहे।

जगूड़ी का होटल घर बाढ़ में समाए

उत्तरकाशी। वर्ष 1978 की बाढ़ में जोशियाड़ा कस्बे को साहित्यकार लीलाधर जगूड़ी के मकान के नीचे की मजबूत चट्टान ने बचाया था। लेकिन इस बार हालात उलट हैं। जगूड़ी का घर और होटल बह गए हैं। यही नहीं जोशियाड़ा में लोक निर्माण विभाग के दफ्तर सहित कई आवासीय घर और अन्य होटलों का भी नामोनिशान मिट गया है। उत्तरकाशी नगर को 1978 और 2012 की बाढ़ से बचाव करने वाले तिलोथ पुल का एप्रोच मार्ग इस बार पूरी तरह से बह गया। इस एप्रोच मार्ग को बनवाने में नब्बे लाख रुपये से खर्च हुए थे। हालांकि यह इस बार की बाढ़ में नब्बे मिनट भी नहीं टिक सका। जोशियाड़ा स्थित डा.चतर सिंह रावत के होटल का भी बड़ा हिस्सा बाढ़ की भेंट चढ़ गया है।

अमर उजाला ब्यूरो

रुद्रप्रयाग। जिले में गौरीकुंड, सोनप्रयाग, चंद्रापुरी का पूरा मार्केट मंदाकिनी नदी के आगोश में समा गया है। अगस्त्यमुनि में करीब 40 भवन मंदाकिनी में समा चुके हैं। रामबाड़ा से पुलिस ने 50 से 60 लोगों के बहने की सूचना वायरलेस पर प्रशासन को दी है। उनके वायरलेस भी पानी में बह गए हैं, इससे सूचनाओं का आदान-प्रदान नहीं हो रहा है।

रुद्रप्रयाग में भी नदी का पानी कई घरों में घुस गया। प्रशासन ने सुरक्षा को देखते हुए नदी किनारे स्थित भवनों को खाली करने की अपील जनता से की है। जिले में आपदा से दो दिन में दस लोगों के मरने और एक के लापता होने की पुष्टि हुई है। केदारनाथ में पांच लोगों की मौत की पुष्टि हुई, जबकि कई लापता हैं।

केदारनाथ स्थित स्वास्थ्य केंद्र में भी पानी भर गया है। गौरीकुंड में होटल और बस पार्किंग बह गई हैं 18 वाहनों के बहने की सूचना है। सिल्ली में 25 मकान और विजयनगर में 30 मकान ध्वस्त हो गए। तिलवाड़ा में चार मकान बहे हैं जबकि केदारनाथ में भूस्खलन जारी है। जिला प्रशासन ने शासन से मदद की गुहार लगाई है।

मंदाकिनी और केदारघाटी का संपर्क कटा

सड़कें और पुल क्षतिग्रस्त होने से मंदाकिनी और केदारघाटी का संपर्क कट चुका है। संचार, विद्युत और पेयजल सेवाएं ठप हो गई हैं। रतूड़ा धारकोट में झूला पुल बह गया और गंगानगर में मोटर पुल के ऊपर से पानी गुजर रहा है। फाटा के पास गांव में एक पुल बह गया जिससे यहां टापू बनने से 11 परिवार फंसे हैं। बारिश से कुंड मोटर पुल मंदाकिनी नदी में डूब गया है। जवाड़ी-रुद्रप्रयाग बाईपास मोटर पुल, संगम, विजयनगर पुल नदी में बह गए हैं। प्रशासन ने पुल से वाहनों की आवाजाही बंद करवा दी।

खराब मौसम ने रोकी उड़ान

जौलीग्रांट से वायु सेना की ओर से राहत-बचाव कार्य के लिए हेलीकाप्टर भेजने का निर्णय लिया गया है। लेकिन खराब मौसम के कारण हेलीकाप्टर उड़ान नहीं भर पा रहा है। मौसम साफ होते ही हेलीकाप्टर के जरिए प्रभावित क्षेत्रों में लंच पैकेट और दवाइयों का वितरण किया जाएगा। केदारनाथ राजमार्ग पर तीन वैली ब्रिज बनाने की जरूरत है। इस संबंध में शासन को पत्र भेजा है। - *विजय ढौंडियाल, डीएम, रुद्रप्रयाग।*

नदियों से बढ़ा खतरा

अलकनंदा का खतरे का जलस्तर 627 है जबकि सोमवार सुबह आठ बजे नदी का जलस्तर 633.8 पर पहुंच गया। वहीं मंदाकिनी का जलस्तर 626 है जो 635.5 तक पहुंच गया है। वहीं आपदा प्रबंधन विभाग ने शासन को यात्रा के दौरान हुई आपदा की प्रारंभिक सूचना दे दी है।

रुदप्रयाग में जवाड़ी पैदल पुल रविवार तक सुरक्षित था लेकिन बारिश लगातार होने से सोमवार को नदी का पानी बढ़ गया और पुल को चपेट में ले लिया, जिससे पुल भरभरा कर गिर पड़ा।